ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3)80
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

सीताराम गुप्ता
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034

Corresponding Author :
सीताराम गुप्ता
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034

लघुकथा:

फ़ितरत

''सर मिस्टर समीर आपकी बड़ी तारीफ़ कर रहे थे। लगता है मिस्टर समीर आपको बहुत मानते हैं या फिर आपकी ज़हानत व आपके ज़ौक़ोशौक़ की बड़ी क़द्र करते हैं, '' समीर के जाने के बाद सक्सेना जी ने संजीव प्रकाश जी को संबोधित करते हुए कहा। संजीव प्रकाश जी ने जवाब दिया, '' हाँ कभी-कभी गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।'' ''क्या मतलब सर? सर आप पर ये गधे वाली कहावत कैसे लागू हो सकती है?'' सक्सेना जी ने किंचित आश्चर्य से पूछा। संजीव प्रकाश जी ने कहा, ''मुझ पर नहीं तो समीर पर ज़रूर लागू होती है ये कहावत। ये किसी की तारीफ नहीं कर सकता और करता भी है तो दूसरों को बेवकूफ़ बनाने के लिए या बेवकूफ़ समझकर ही करता है और वो भी किसी ख़ास मक़सद से।'' ''तो सर यहाँ क्या ख़ास मक़सद था मिस्टर समीर का जिसकी वजह से वो आपकी तारीफ़ों के पुल बाँधे जा रहा था?'' सक्सेना जी ने जानना चाहा। संजीव प्रकाश जी ने समीर के मक़सद को समझाते हुए कहा, ''सक्सेना जी आपने शायद ध्यान नहीं दिया कि समीर मेरे बारे में जो भी बातें कह रहा था वे सब बातें वो पास खड़े वर्मा जी को सुना-सुनाकर कह रहा था। समीर दरअसल मेरी तारीफ़ों के पुल बाँधने के बहाने वर्मा जी को कमतर सिद्ध करने के प्रयास में लगा हुआ था।'' ''सर वर्मा जी बेशक सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं लकिन हैं तो वे भी बड़े ही ज़हीन क़िस्म के शख़्स। उन्हें नीचा दिखाने का क्या मक़सद हो सकता है?'' सक्सेना जी ने अपनी बात रखते हुए पूछा। संजीव प्रकाश जी ने समीर की शख़्सियत का खुलासा करते हुए कहा, ''सक्सेना जी, वर्मा जी बेशक ज़हीन क़िस्म के शख़्स हैं लेकिन समीर तो नहीं है ना। जहाँ चार आदमी हाज़िर हों वहाँ समीर जिसे अपने हिसाब से सबसे पावरफुल आदमी समझता है उसकी तारीफ़ करना और बाकी को नज़रअंदाज़ करना या नीचा दिखाने की कोशिश करना इस शख़्स की ख़ानदानी फ़ितरत है।''

•••